

योगदा आश्रम शरद संगम में ईश्वरानुभूति की बही बयार

संगम में देश-विदेश के लोगों ने लगाई झुबकी

संवाददाता

रांची : शरद संगम में जो स्वर्ग का आनन्द प्राप्त कर रहे हैं, इस स्वर्ग को आप अपने घर में भी महसूस करें और इस एहसास को अपने घर तक ले जाये, क्योंकि ये आनन्द, ये ईश्वरानुभूति ही मनुष्य को परम आनन्द की ओर ले जाती है। ये बातें बुधवार को शरद संगम के अंतिम दिन समापन समारोह में योगदा सत्संग आश्रम के स्वामी स्मरणानन्द ने कही। उन्होंने मुख्य पंडाल में देश-विदेश से आये भक्तों को संबोधित करते हुए कहा, ये शरद संगम दरअसल भक्तों द्वारा, भक्तों के लिए, भक्तों को समर्पित रहा है, जिसमें गुरुजी परमहंस योगानन्द जी ने अपने स्नेहाशीष की वर्षी की, जिससे लोगों को स्वार्गिक आनन्द प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि आप ध्यान को, सदा के लिए अपने जीवन की दिनचर्या में शामिल कर लें, निरन्तर इसका अध्यास करें रहें, कभी समस्या आएं तो घबराएं नहीं, समस्याओं के बीच भी आनन्द को महसूस करते रहें। हो सके तो सामूहिक ध्यान पर विशेष ध्यान दें, ये न भूलें हमारे साथ गुरुजी का आशीर्वाद है, जो हमें निरन्तर ऊर्जान्वित करते रहते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि सिर्फ ईश्वर ही हमें हर प्रकार से सुखित, संखित और प्रेम आनन्द से भर सकते हैं। और ये तभी संभव है, जब गुरु कृपा हो।

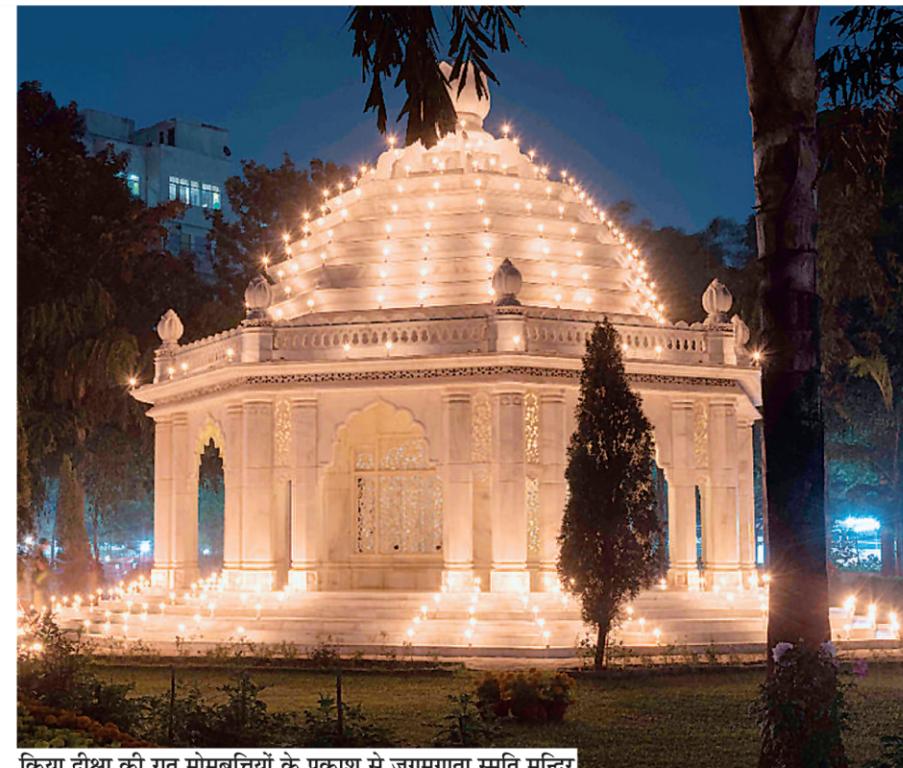


वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से लॉस एंजिलिस से संबोधित करते हुए स्वामी चिदानन्द

लॉस एंजेलिस से स्वामी चिदानन्द ने ऊँ से भक्तों को कराया साक्षात्कार

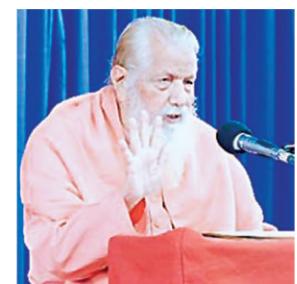
शरद संगम के प्रथम दिन बड़ी संख्या में योगदा सत्संग आश्रम में पधारे, देश-दुनिया के भक्तों पर अपना आशीर्वाद लुटाते, लॉस एंजिलिस से स्वामी चिदानन्द ने कहा कि ये बहुत ही सुंदर मौका है। गुरु की कृपा से आप सभी रांची के योगदा सत्संग आश्रम में एकत्रित हैं। स्वामी चिदानन्द ने कहा कि इस पवित्र के लिए कुछ भी नहीं बचता। आप सबसे पहले संसारिकता और परेशानियों को धो डालें। पवित्र मन से गुरु का ध्यान करें। प्रतिज्ञा करें कि आप प्रकाश हैं और दिव्य प्रकाश से आलोकित हैं, उस प्रकाश से ही स्वयं को पर हैं। उनका आशीर्वाद ईश्वरीय कृपा से आकाश मार्ग से होता हुआ, आप सभी पर बरस रहा है।

अभिव्यक्त कर, स्वयं तथा दूसरों को भी आलोकित करें। स्वामी चिदानन्द ने कहा कि ऊँ के स्पन्दन को, उसकी ध्वनियों को, अनुभवों को महसूस करें, क्योंकि ऊँ के तीन पहलू हैं। उन्होंने कहा कि याद रखें, ईश्वर और गुरु में कोई अन्तर नहीं, ध्यान की अवस्था में गुरु ऊँ के ही मूर्त्तरूप है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमें ऐसे गुरु मिले, जिन्होंने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा, हमेशा मेरा साथ दिया।



क्रिया दीक्षा की रात मोमबत्तियों के प्रकाश से जगमगाता स्मृति मन्दिर

जीवन में ईश्वर एवं गुरु पर विश्वास जरूरी



शरद संगम के दूसरे दिन प्रार्थना में जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर एवं गुरु में विश्वास रखना विषय पर बोलते हुए स्वामी नित्यानन्द ने योगदा से जुड़े भक्तों को कहा, ज्यादातर देखने में आया है कि जब हम अपनी कोशिशों से हार जाते हैं तब प्रार्थना पर ध्यान देते हैं, पहले हम अपने बुद्धिबल, धनबल तथा बाहुबल से उन हर चीजों को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। जो पाना चाहते हैं और जब नहीं मिलता तो हारे को हरिनाम के आधार पर भगवान के शरण में चले जाते हैं। उन्होंने कहा कि भगवान से जो भी कुछ मांगना हो, मांगने के पहले सोच लीजिये। वही मांगिये, जो ईश्वर आपको सहर्ष प्रदान कर दें। यही नहीं दूसरों को जिससे नुकसान पहुंचता है, ऐसी मांग कभी भी ईश्वर के समक्ष मत रखिये।

साधना और ध्यान में एकाग्रता के लिए गुरु की कृपा आवश्यक

शरद संगम के तीसरे दिन स्वामी नित्यानन्द ने साधना और ध्यान से कैसे हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं, इस संबंध में अपने अनुभवों को भक्तों के साथ साझा किया। उनका कहना था कि ध्यान का मतलब ही है कि भगवान के स्वामी दूसरे का ध्यान नहीं करना। और जिसने इस ध्यान को साधना का मार्ग बना दिया, तो समझ लीजिये, उसका कल्याण हो गया। उसे सफलता मिलनी सुनिश्चित है। उन्होंने कहा कि जिस किसी ने गुरु के साथ अन्तरसम्पर्क बनाये रखा, गुरुजी के बताये पाठ का अनुशरण किया, गुरुओं पर भरोसा रखा, उसे सफलता मिली। क्योंकि सच्चे गुरु हमेशा ईश्वर के समान हैं और वे अपने भक्तों पर कृपा लुटाते रहते हैं। ब्रह्मचारी धैर्यानन्द ने विचारों की परिवर्तनकारी शक्ति पर अपनी बातें रखी। उनका कहना था कि आप यह जान लें कि जीवन का लक्ष्य ईश्वर को पाना है, और मनुष्य शरीर, मन और आत्मा के वशीभूत हैं, हम मन के माध्यम से ही आत्मा को जानते हैं, जो आत्मा आनन्द का स्रोत है। धैर्यानन्द ने कहा कि आप जान लें कि लहरों को समुद्र बनाती है, समुद्र लहर नहीं हो सकता। ठीक उसी प्रकार हमें ईश्वर ने बनाया पर हम ईश्वर नहीं हो सकते। हमें उन्हें हर हाल में पाना है।

खाली मन को ईश्वरीय प्रेम से भरना जरूरी



स्वाध्याय का आनन्द नहीं उठा सकता, इश्वरीय ज्ञान के प्रति ललक को बढ़ाने की तथा अपने विचारों एवं हृदय की शुद्धता को बरकरार रखने की।